

अगज वि. (तत्.) पर्वत से उत्पन्न होने वाला, पहाड़ पर होने वाला पुं. एक प्रकार की ओषधि शिलाजीत।

अगजग पुं. (तद्.) 1. चराचर, जड़-चेतन 2. सारा संसार।

अगजा स्त्री. (तत्.) पर्वत से जन्म लेने वाली-पार्वती, पर्वत की कन्या।

अगड़ पुं. (तद्.) शृंखला या बेड़ी, हाथी के पैर में बाँधे जाने वाली बंधन स्वरूप जंजीर।

अगड़बगड़ पुं. (देश.) बेसिर-पैर का, अंडबंड पुं. बेसिर-पैर की बात, अंडबंड काम, व्यर्थ का काम, अनुपयोगी वस्तुओं का जमावड़ा प्रयो. घर में (व्यर्थ का) अगड़-बगड़ क्यों जमा कर रखा है।

अगड़म-बगड़म पुं. (देश.) 1. दे. अगड़बगड़ 2. अनाप-शनाप।

अगड़ा वि. (तद्.) जो आगे स्थित हो, उन्नत स्थिति वाले, जो दूसरों की अपेक्षा ज्यादा विकसित हो।

अगड़ा वर्ग वि. (तद्.+तत्.) (हिंदू) जातियों के उन्नत वर्ग विलो. पिछड़ा वर्ग।

अगड़ी वि. (तद्.) अग्र पंक्ति में स्थित, आगेवाली, उन्नत, 'पिछड़ी जातियों' के सृजन पर नवनिर्मित शब्द जैसे- 'अगड़ी' जातियां।

अगण पुं. (तत्.) 1. अशुभ गण, बुरा गण 2. पिंगल (छंद शास्त्र) के चार गण-जगण, तगण, रगण, सगण, जो छंद के आदि में अशुभ माने जाते हैं।

अगणनीय वि. (तत्.) 1. न गिना जा सकने वाला, ऐसे संज्ञापद के लिए प्रयुक्त शब्द जिसकी गणना नहीं की जा सकती जैसे- 'आदमी को दो वक्त की रोटी चाहिए' में 'रोटी' शब्द uncountable 2. अनगिनत, असंख्य विलो. गणनीय।

अगणनीय संज्ञा स्त्री. (तत्.) वह संज्ञा शब्द जिसके द्वारा इंगित वस्तुओं की गणना नहीं की जा सकती, जैसे- सोना, तेल आदि विलो. गणनीय संज्ञा।

अगणित वि. (तत्.) जिस की गणना नहीं की जा सकती हो, अगणनीय, जिसकी संख्या निर्धारित न हो सके।

अगण्य वि. (तत्.) 1. न गिना जाने योग्य, असंख्य, बेशुमार 2. सामान्य, तुच्छ।

अगति स्त्री. (तत्.) 1. दुर्गति, बुरी गति, दुर्दशा, दुरवस्था 2. गति का अभाव, अस्थिरता 3. निधन होने के बाद शव का दाह संस्कार उचित ढंग से न होना, मृत्यु के बाद बुरी दशा।

अगतिक वि. (तत्.) 1. जिसकी कहीं गति या पैठ न हो। 2. अशरण, अनाथ, निराश्रय, जिसे कहीं ठिकाना न मिले 3. जिस पर चलना मुश्किल हो 4. कुपथ, कुमार्ग।

अगतिमय वि. (तत्.) गतिहीन, जड़।

अगत्या क्रि.वि. (तत्.) आगे से, भविष्य में, आगे चलकर, अंत में, विवशता में।

अगद वि. (तत्.) जो रोग रहित या स्वस्थ हो। विघ्नरहित पुं. 1. स्वस्थ भाव या स्वास्थ्य 2. दवाई, औषधि।

अगद-तंत्र पुं. (तत्.) चिकि. आयुर्वेद का एक अंग जिसमें विषपीडित व्यक्ति की चिकित्सा करने का विधान हो।

अगनी स्त्री. (तद्.) 1. अग्नि 2. घोड़े के माथे पर भौंरी या घूमे हुए बाल।

अगम वि. (तत्.) 1. अगम्य, जहाँ कोई जा न सके, न जाने योग्य, दुर्गम, 2. कठिन, विकट, गहन 3. न मिलने योग्य, दुर्लभ 4. अपार, अत्यंत, बहुत 4. अचल, स्थावर पुं. 1. पर्वत 2. वृक्ष।

अगमग वि. (देश.) मग्न, आनंद में मग्न।

अगमगना अ.क्रि. (देश.) आगे बढ़ना।

अगमन पुं. (तत्.) गति का अभाव, अगति, न चलना, नहीं जाना क्रि.वि. (तत्.) आगे, पहले, प्रथम।

अगम-निगम पुं. (तत्.) आगम निगम शास्त्र, तंत्र और वेद।